भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका

प्रा.सोनार ज्ञानेश्वर भगवंत श्री शिव छत्रपती कॉलेज जुन्नर जि. पुणे. ई-मेल: dnyaneshwarsonar37@gmail.com

---

अतीत वर्तमान की आधारशिला होती है तो वर्तमान भविष्य की आधारशिला होती है। अतीत का महत्त्व इसलिए है कि अतीत से अनुभव पाकर और सीखकर हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते है। अतीत से वर्तमान के प्रति नई सजगता आती है। अतीत का अध्ययन हमारे वर्तमान और भविष्य के लिए दिशादर्शक होता है इसलिए अतीत के इतिहास को जानना और उसका अध्ययन करना आवश्यक होता है क्योंकि उससे ही हमें अतीत की कमियाँ और सुधार की आवश्यकताएँ ज्ञात होती है। इतिहास के अध्ययन से ही हमारा वर्तमान और भविष्य सुंदर सुखमय बनता है।

आज हमारी भारतीय महिलाएँ पूरे विश्व में हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम फहरा रही है उसमें प्राचीन भारतीय नारी का अहम योगदान रहा है। अति प्राचीन काल में भारतीय महिलाओं की स्थिति बहुत ही सम्मानजनक थी। उस समय स्त्री-पुरुष ऐसा कोई भेद नहीं किया जाता था। उन्हें पुरुषों के समान बराबरी का स्थान और अधिकार मिलता था। उन्हें सुख, वैभव तथा ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। उनके बिना कोई भी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कार्य पूरा नहीं होता था। उन्हें अपनी मर्जी से अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार था। इस काल में विशेषतः वैदिक काल में भारतीय स्त्रियां बुद्धि और शिक्षा में बहुत अग्रणी थी। वे तर्कशास्त्र और वाद-विवादों में भी निपुण थी। सुलभा, गार्गी और मैत्रेयी आदि विदुषी नारियाँ उसके उत्तम उदाहरण है। उस समय समाज मातृसत्ताक था, वही भारतीय समाज वैदिक काल के उत्तरार्ध में धीरे-धीरे पितृसत्ताक बनता गया। इस काल से भारतीय नारी का पतन शुरू हुआ। जिस भारतीय नारी की वैदिक काल में सरस्वती या दुर्गा के रूप में पूजा की जाती थी उसका जन्म अभिशाप समझा जाने लगा। इस काल में उसकी बराबरी का अधिकार भी छीन लिया गया।

मध्यकाल में महिलाओ की स्थिति में और गिरावट आई। विदेशी शासक और जन्म असुरक्षा ने बाल विवाह, सती प्रथा और जौहर प्रथा जैसी कु-रीतियों को जन्म दिया। विधवा विवाह पर रोक लगा दी गई थी। बहुविवाह की प्रथा शुरू हुई। इस काल में पुरुष एक से अधिक पत्नी रखने में अपनी शान समझते थे। स्त्री को केवल उपभोग की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा। इस समय स्त्री शिक्षा पर पूर्णतः प्रतिबंध था।

भक्तिकाल में भक्ति आंदोलनों ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश की। भक्ति आंदोलनों में निहित विभिन्न भक्ति संप्रदायों ने पुरुष और महिलाओं के बीच सामाजिक न्याय और समानता का खुलकर समर्थन किया। इस काल में संत कवियत्री मीराबाई स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पुरुषवादी दृष्टिकोण का खुलकर विरोध किया। मीराबाई का जीवन संघर्ष वर्तमान भारतीय नारी के लिए प्रेरणास्रोत बन सकता है। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद गार्गी, मैत्रेयी, जीजाबाई, मीराबाई, रानी लक्ष्मीबाई, महारानी दुर्गावती जैसी महिलाओं ने साहित्य, कला, दर्शन, राजनीति, शिक्षा और धार्मिक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की।

अंग्रेजों का शासन काल भले ही दासता की सौगात लेकर आया हो परंतु यूरोपीय पुनर्जागरण का भारतीय समाज पर सकारात्मक प्रभाव हुआ। अंग्रेजों के शासन काल में महिलाओं की स्थिति में आए परिवर्तनों ने भारतीय महिलाओं को अपनी प्रतिभा और योग्यता दिखने का अवसर मिला। सन १८३३ में चंद्रमुखी बसु और कादंबिनी गांगुली भारत में स्नातक की उपाधि पाने वाली प्रथम महिलाएँ बनी। आनंदीबाई जोशी देश की प्रथम महिला डॉक्टर बनी थी जिन्होंने अमेरिका से एमडी की पदवी प्राप्त की थी।

अंग्रेजों के शासन काल में राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, महर्षि धोंडो केशव कर्वे जैसे कई समाज सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिए तथा भारतीय समाज में खोया हुआ सामाजिक स्थान दिलाने के लिए भरसक कार्य किया। राजा राम मोहन राय के कारण सती प्रथा का निर्मूलन हुआ। ईश्वरचंद्र विद्यासागर के कारण भारतीय विधवाओं की स्थिति में सुधार आया।

पंडिता रमाबाई जैसे कई महिला समाज सुधारकों ने महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य किया। उन्होंने ११ मार्च १८८९ को मुंबई में निराश्रित विधवाओं तथा अन्य स्त्रियों के लिए 'शारदा सदन' नामक संस्था की स्थापना की उसका उद्देश्य भारतीय स्त्रियों को शिक्षा तथा रोजगार प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना था। अनाथ बालिकाओं के लिए उन्होंने पुणे के पास केडगाव में 'मुक्ति सदन' की स्थापना की। सन १९१६ में समाज सुधारक महर्षि धोडो केशव कर्वे जी ने केवल पाँच छात्रों के साथ देश का पहला महिला विश्वविद्यालय एस एन डी टी की स्थापना की।१९ वी सदी के भारत की क्रांतिकारी महिलाओ में सावित्रीबाई फुले का स्थान अग्रणी रहा है। बड़ी प्रतिकूल परिस्थिति में फुले दंपति ने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में प्रथम कदम आगे

बढ़ाया। आधुनिक भारत की प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले को समाज और देश के प्रगति के प्रति काफी लगाव था। अपने पति महात्मा फुले के समाज सुधार आंदोलन में साथ देते हुए अस्पृश्यता उन्मूलन तथा स्त्री शिक्षा जैसे अनेक क्षेत्रों में समाज सुधार का कार्य किया।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय स्त्रियों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। स्वतंत्रता के बाद घर की चारदीवारी से निकलकर हर क्षेत्र में वित्तीय, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा विज्ञान, शिक्षा, खेल जैसे हर क्षेत्र में सफलता के साथ आगे बढ़ रही है। आज भारतीय नारी पहले जैसे पुरुषों पर निर्भर नहीं है। खुद धनोपार्जन कर प्रतिदिन बढ़ने वाली महँगाई का मुकाबला करने के लिए तथा परिवार को सुचारु रूप से चलाने के लिए पति का साथ दे रहीं है। देश की राजनीति में भी वह सफलता के साथ कार्य कर रही है। देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के पद पर भी कार्य किया है। आज हर क्षेत्र में भारतीय महिलाएँ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर सफलता के साथ कार्य कर रही है यह हर देशवासियों के लिए गौरव की बात है। प्रायः कमजोर समझी जाने वाली महिलाएँ सेना जैसे संवेदनशील क्षेत्र में भी अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रही है। स्वतंत्रता के बाद हमारी महिलाओं ने काफी प्रगति की है। वह फाइटर प्लेन उड़ा रही है, ओलंपिक में पदक जीत रही है, ऊंचे पदों पर कार्य कर रही है। स्वतंत्रता के बाद महिलाओं के साक्षरता के दर में जरूर वृद्धि हुई है परंतु खेद के साथ यह कहना पड़ता है की वह संतोषजनक नहीं है।

हमारे संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किया है लेकिन आज भी अपने देश का पितृसत्ताक समाज अपने नियमों के अनुसार ही महिलाओं को संचलित करता है। आज भी हमारी महिलाओ को अपना भविष्य बनाने के लिए, करियर चुनने के लिए शादी से पूर्व अपने पिता और भाई पर तथा शादी के बाद पति पर निर्भर रहना पड़ता है।आज भी देश में निरक्षर महिलाओं की संख्या अधिक है। जैवकीय श्रेष्ठता के बावजूद उनकी मृत्युदर अधिक है। आज भी वह घरेलू हिंसा, कुपोषण, कार्यस्थल में यौन शोषण का महिलाओं को सामना करना पड़ता है। भारतीय महिलाएँ भी दुनिया के दूसरे देशों की महिलाओं की तरह प्रतिभाशाली है, हर समस्याओं को सुलझाने में सक्षम है बस आवश्यकता है उन्हें उचित अवसर प्रदान की। वर्तमान भारतीय नारी के लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ बेहद प्रासंगिक है जो देश की बेटियों को नई ऊर्जा प्रदान करती है;-

"आओ उड़ान भरें
पंख भी हैं, खुला आकाश भी है
फिर ये न उड़ पाने की मजबूरी कैसी?"

संदर्भ सूची:

१) आधुनिक भारत की नारी (ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में) – डॉ. ममता गंगवार
२) कर्तुत्व शालिनी – नीलिमा साने.
३) थोर समाज सुधारक – विलास केशव राठोड